ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

लोक देवता पाबूजी

सारांश

पाबूजी राठौड़ को ऊँटों का देवता माना जाता है। इनका जन्म जोधपुर जिले की फलौदी तहसील के 'कोलू' ठिकानेमें हुआ था। इनमे पिता धांधल जी राठौड़ और माता कमलादे थी। विवहा सोढ़ी राजकुमारी सुपियारदे से हुआ। पाबूजी को लक्ष्मण का अवतार माना जाता है। इनके पवाड़े अधिक प्रसिद्ध हैं। इनकी स्मृति में प्रतिवर्ष 'कोलू' गाँव में मेला भरता है। देवल चारणी द्वारा दी गई पाबूजी की घोड़ी का नाम 'केसर कालमी' था। पाबूजी गायों की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। मारवाड़ में सर्वप्रथम ऊँटनी लाने का श्रेय पाबूजी को ही जाता है। अतः ऊँटों की पालक रबारी जाति इन्हें अपना आराध्य देव मानती हैं। आशिया मोडजी द्वारा पाबूजी के जीवन दर्शन पर 'पाबू प्रकास' नाम से एक ग्रन्थ की रचना की गई है। पाबूजी का प्रतीक चिह्न भाला लिए अश्वारोही है।

बीना जैन
सह–आचार्य,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

मुख्य शब्द : मारवाड़, राठौड़, पाबूजी, कमलादे, केसर कालमी, देवल चारणी, सुपियारदे, पाबू प्रकाश, कोलू ग्राम

प्रस्तावना

भारत एक धर्म–प्राण देश है। भारतीय संस्कृति की प्रमुखतम विशेषता धार्मिकता है अतः भारत के प्रत्येक क्षेत्र में धार्मिक गतिविधियाँ मानव जीवन को संचालित करती हुई नजर आती हैं। धर्म का समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर प्रभाव देखने को मिलता है। जीवन को अनुशासित तथा नियंत्रित करने में धर्म महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राजस्थान इसका अपवाद नहीं है।

राजस्थान में भी मनुष्य की जीवन व्यवस्था में धर्म और धार्मिक आस्था की गहरी छाप मिलती है। राजस्थान में प्राचीन काल अद्यतन सभी वर्ग और स्तर के व्यक्ति विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों तथा परम्पराओं में आस्था रखते आए हैं।[1] प्राचीनकाल में वैदिक तथा जैन धर्म, कालान्तर में वैदिक धर्म की शाखाएँ शैव, शाक्त और वैष्णव धर्मों के रूप में विकसित हो पनपीं।

राजस्थान के इतिहास में मध्ययुग अस्थिरता तथा संघर्ष का समय रहा है। राजनीतिक उथल–पुथल ने राजस्थान की राजनीति के साथ–साथ यहाँ की संस्कृति एवं धर्म को प्रभावित किया है। बाह्य आक्रमणों के परिणामस्वरूप राजस्थान बलात् धर्मान्तरण का शिकार बना और यहाँ के देवालय आक्रमणकारियों के निशाने बने। राजनैतिक असुरक्षा, अव्यवस्था, अनिश्चितता के कारण परम्परागत धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था के पालन में उपस्थित हुई बाधाओं से जीवन में खिन्नता, हीनता और नीरसता की परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं। अतः इन परिस्थितियों की प्रतिक्रिया स्वरूप भक्ति आन्दोलन हुए।[2]

सामान्यतः ग्यारहवीं शती से तथा विशेषतः तेरहवीं शती से, राजस्थान में इस्लाम के प्रवेश एवं तुर्क आक्रमणों से राजस्थान के जन–जीवन में एक नई परिस्थिति उत्पन्न हो गई। बाह्य प्रभावों (यथा इस्लामी संस्कृति) तथा आभ्यन्तरिक दोषों (यथा रूढ़िवाद और बाह्याडम्बर) से उत्पन्न वातावरण में प्रायः प्रबुद्ध मनीषियों की चिन्तन–धारा मन्दिरों और मूर्तियों की अपेक्षा ध्यान, मनन एवं नाम–स्मरण की दिशा की ओर प्रवाहित होने लगी। विचारकों का ध्यान जात–पाँत के भेदभावों से ऊपर उठकर मानव–मात्र के कल्याण की ओर अग्रसर होने लगा तथा भक्ति–भावना का सहज–स्वरूप 'जात–पाँत पूछै नहिं कोई–हरि को भजै सो हरि को होई' मंत्र के रूप में लोकप्रिय होने लगा। फलतः समाज में एक नवीन स्फूर्ति एवं चेतना उत्पन्न हुई।[3]

राजस्थान प्रदेश के सीमान्त भाग भरतपुर, फतेहपुर, शेखावाटी व अलवर आदि मुस्लिम संस्कृति के प्रभाव में आ चुके थे। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में होने वाले विविध आक्रमणों के परिणामस्वरूप धार्मिक अनाचार, उत्पीड़न और सामाजिक अत्याचार व्याप्त था।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

ऐसी संक्रमणकालीन परिस्थिति में धर्म एवं परम्परा की रक्षा के साथ–साथ स्थानीय जनता की सुरक्षा और अन्त्यजों के व्यक्ति जनता के समक्ष आए जिन्होंने न केवल तथाकथित निम्न जातियों को गले लगाया, प्रत्युत् स्थानीय जनता और पशुओं की भी रक्षा हेतु प्राणोत्सर्ग किया। इनमें पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी और रामदेवजी आदि मुख्य थे, जिनके शौर्य, आत्मोत्सर्ग तथा लोक–हितकारी कार्यों से अभिभूत होकर राजस्थान की जनता ने इन्हें आराध्य जैसा पूज्यत्व प्रदान किया।[4]

राजस्थान के गाँव–गाँव और ढाणी–ढाणी में इन लोक–देवताओं के 'थान' बने हैं जिनमें पत्थर पर उत्कीर्ण इन देवताओं की मूर्ति या 'पगल्या' अंकित मिलते हैं जो समूचे राजस्थान को ही नहीं भारतवर्ष को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास करते हैं। जाति–पाँति और छुआ–छूत से दूर इन 'थानों' पर सभी जाति के लोग इनको पूजने आते हैं। पूजा का विधान भी कोई कर्मकाण्डी नहीं बल्कि भक्त श्रद्धानुसार स्वयं अपने देव को अर्पित उत्पीड़न का अन्त जैसी विकट समस्याएँ उपस्थित हो गईं। ऐसी परिस्थितियों में मरुप्रदेश में कुछ ऐसे करते हैं। गाँव में 'हारी–बीमारी' में इनको सबसे पहले पूजा जाता है इनके जन्मदिन या बलिदान दिवस पर श्रद्धालु प्रसाद चढ़ाते हैं मनौती पूर्ण होने पर 'जम्मा' दिखाया जाता है, जागरण दिया जाता है और मनोरथ पूर्ण होने पर 'पड़' बँचवाई जाती है।

मारवाड़ में लोक–देवताओं के लिए एक दोहा प्रसिद्ध है जिसमें पाबूजी की गणना सबसे पहले होती है –

पाबू हड़बू रामदे, गोगादे जेहा।
पांचू पीर पधारज्यो, मांगळिया मेहा।।[5]

मारवाड़ में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले, जोधपुर के राठौड़ों के मूल पुरुष राव सीहा जी की चौथी पीढ़ी में पाबूजी हुए। ये राव आसथान जी के पौत्र और धांधल जी के पुत्र थे।[6]

लोक नायक पाबूजी का वंश वृक्ष[7]

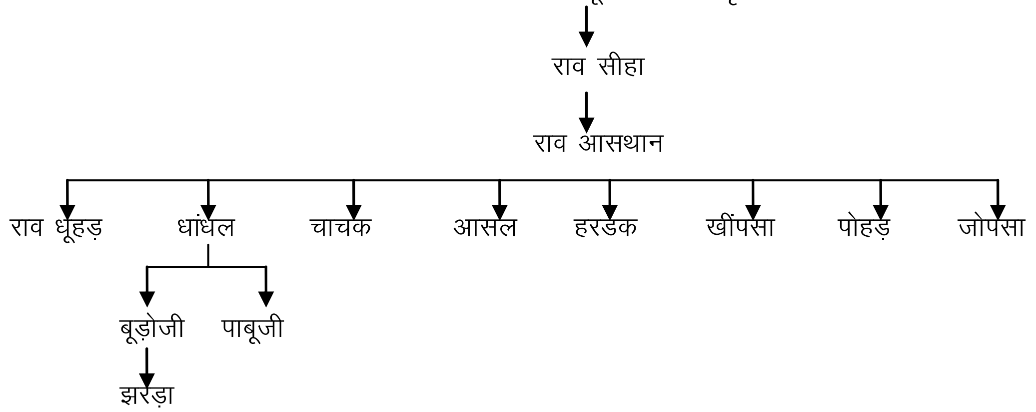

कोलूमण्ढ स्थित पाबूजी के वंशज तथा अन्य लोगों में प्रचलित मान्यता के अनुसार पाबूजी का जन्म वर्तमान बाड़मेर से आठ कोस आगे खारी खाबड़ के जूना नामक ग्राम में अप्सरा के गर्भ से हुआ।[8] इस बात से इतिहासकार मुहणोत नैणसी, महाकवि मोडजी आशिया व जनमानस पूर्णतया सहमत है। मोडजी आशिया अपने महाकाव्य 'पाबू प्रकास' में लिखते हैं –

उण सरवर रै ऊपरा। परी रहै नृप पास।
कोलू नृपत कराविया। ओदी मिस ऐवास।[9]

(सरोवर के किनारे अप्सरा रहने लगी और कोलू के अधिपति धांधल वहाँ प्रतिदिन शिकार के बहाने जाकर अप्सरा के साथ रमण करने लगे।)

अधपत वालौ अंस। पड़ियौ अपछर पेट में।
तद लछमण अवतंस। रतन कंवर पाबू रह्यौ।।[10]

(अप्सरा और धांधल के संगम से अप्सरा के गर्भ से लक्ष्मण के अवतार रूप में पाबूजी जैसा रत्न पैदा हुआ।)

वरदायक वालौह। अपछर रै उर ऊपनो।
पाबू पौथालौह। वरष जितौ दिन में वदै।।[11]

(बालक पाबू दिन–रात बड़े होने लगे रूप से सुन्दर और हृष्ट–पुष्ट सभी का मन मोहने लगे।)

'बात पाबूजी री' (मुहणोत नैणसी) 'पाबू प्रकास' (महाकवि मोडजी आशिया) व लोकमानस में जो कथा प्रचलित है वह इस प्रकार से है :

एक समय धांधल पाटण के रमणीक सरोवर पर डेरा डाले हुए थे। वहीं सरोवर के किनारे स्वर्ग से आई अप्सरा से उनकी भेंट हुई। अप्सरा ने इन्द्र के समक्ष मानव देह की प्रशंसा कर दी थी। इससे क्रोधित इन्द्र ने उसे श्राप दे दिया कि, तुम पृथ्वी पर जाकर ही वहाँ अपना जीवन व्यतीत करो। यही अप्सरा धांधल को मिली। सुन्दर अप्सरा को देख धांधल उस पर मोहित हो गए और विवाह का प्रस्ताव दिया। परन्तु अप्सरा ने धांधल के समक्ष कुछ शर्तें रखीं–

1. गाँव से दूर इकथंबे महल का निर्माण करवाना।
2. मेरा भेद किसी को भी नहीं देना।
3. आप जब कभी भी महल में प्रवेश करें तो खंखारा कर (खाँस कर) महल में प्रवेश करना।

धांधल ने शर्तें स्वीकार कर ली। दिन में वे अपना राज–काज करते और रात को घोड़े पर सवार होकर अप्सरा से मिलने चले जाते। कुछ समय पश्चात् इसी अप्सरा के गर्भ से पाबूजी का जन्म हुआ।

एक दिन रानी कमलादे के मन में शंका उत्पन्न हो गई कि आखिर राजा घोड़े पर सवार होकर कहाँ जाते

हैं। रात को जब राजा घोड़े पर सवार होकर अप्सरा से मिलने गए तो रानी भी पीछे–पीछे घोड़े पर सवार होकर चली गई। धांधल के मन में भी शंका थी कि वह अप्सरा अकेली क्या करती है। उस दिन धांधल बिना 'खंखारा' किए ही महल में प्रवेश कर गए। आगे का दृश्य देखते ही दंग रह गए कि अप्सरा सिंहनी का रूप धारण किए हुए पाबू को स्तनपान करवा रही है। अप्सरा की नजर जब धांधल पर पड़ी तो उसने कहा कि, 'आपने बिना खंखारा किए महल में प्रवेश करके दिया हुआ वचन भंग किया है इसलिए अब मैं वापस स्वर्ग लोक जा रही हूँ'। इतने में रानी कमलादे भी पीछे आ गई। इस पर धांधल कमलादे पर कुपित हुए परन्तु रानी ने पाबू को अपने पुत्र के समान पाल–पोसकर बड़ा करने का वचन दिया। अप्सरा ने पाबू से कहा कि पाबू तुम्हें दूध तो पिला दिया परन्तु खेलना बाकी रह गया सो तुम्हें अपनी पीठ पर खेलाऊँगी यह कहकर अप्सरा स्वर्ग लोक के लिए प्रस्थान कर गई। यही अप्सरा 'केसर कालमी' घोड़ी के रूप में आनन्द जी चारण की पुत्री देवल देवी के घर जन्म लेती है। बालक पाबू को धांधल व कमलादे घर ले आए और प्रातःकाल होते ही पाबूजी को कमलादे का पुत्र घोषित कर दिया।[12]

विश्वेश्वर नाथ रेउ के अनुसार पाबूजी का समय 13वीं शती है। जन्म स्थान मारवाड़ का (फलौदी प्रांत) कोलू ग्राम था। 'राठौड़ां में खांप धांधलां री ख्यात' में पाबूजी का जन्म विक्रम संवत् 1276 भादवा सुदी पंचमी को माना गया है। इसके अनुसार पाबूजी का जन्म एक अप्सरा द्वारा हुआ है।[13]

'पाबू प्रकास' के रचयिता महाकवि मोडजी आशिया के अनुसार पाबूजी का जन्म विक्रम संवत् 1299 में हुआ। इस सम्बन्ध में दोहा लिखते हैं –

वारौ संवत पेख, निस्चै बरष निनांणओ।
पाबू जनम संपेष, मासोतम फागुण मुकर।।[14]

शोध के दौरान प्राप्त 'राठौड़ां में खांप धांधला री ख्यात' में पाबूजी का जन्म विक्रम संवत् 1276 भादवा सुदी पंचमी को माना गया है। परन्तु इससे पाबूजी के जीवनकाल का अंतराल बहुत बढ़ जाता है। अतः मोडजी आशिया द्वारा प्रदत्त जन्म संवत् ही अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

धांधल की रानी कमलादे ने पाबूजी को अपने पुत्र के समान पाल–पोसकर बड़ा किया। बाल्यकाल में ही पिता धांधल स्वर्गवासी हो गए और पाबूजी के बड़े भाई बूड़ोजी राजगद्दी पर बैठे। पाबूजी का बचपन अपनी बहिन पेमलदे और आनन्द जी चारण की पुत्री देवल देवी के साथ हँसते खेलते बीता। देवल देवी बचपन से ही पाबू को अपना धर्म भाई मानने लगी थी।

देवल पाबू दखां वंश दीपक वरदाई।
वेहुं भाई बैन रमै चौवटे सदाई।[15]

पाबूजी बाल्यकाल से ही अत्यन्त पराक्रमी थे। जालौर के आना बघेला नामक शक्तिशाली ठाकुर के पुत्र को मारकर आए हुए सात थोरी (चाँदिया, देविया, खाबू, पेमला, खलमल, खंगारा व बासल)[16] भाइयों को एकमात्र बालक पाबूजी ने ही आश्रय दिया। अपने पुत्र के वैर में आना बघेला ने इन थोरियों के पिता को मार दिया था। पाबूजी राठौड़ ने सिरोही जाते समय थोरियों को भी अपने साथ रखा और आना बघेला को मारकर अपने आश्रित थोरियों का वैर लिया। सिरोही के रावदेवड़ा से पाबूजी की बहन सोनाबाई का विवाह हुआ था। आना बघेला की पुत्री भी रावदेवड़ा की पत्नी थी जो सोनाबाई को आभूषणों के अभाव के कारण ताने देती रहती थी, इसी संदर्भ में रावदेवड़ा और सोनाबाई में कहा–सुनी हो गई। देवड़ा सोनाबाई को चाबुक मार देते है। सोनाबाई के सन्देश पर पाबूजी सिरोही आए तो उनके बहनोई रावदेवड़ा ने पाबूजी से क्षमा–याचना की। आना बघेला के पुत्र ने अपनी विधवा माता के गहने समझौते के रूप में पाबूजी को भेंट किए जो पाबूजी ने अपनी बहिन सोनाबाई को दे दिए।

पाबूजी की एक बहिन पेमाबाई जायल (नागौर) नरेश जींदराव खींची को दी गई थी, उसी गाँव में देवल चारणी के पास 'केसर कालमी' नामक अद्भुत घोड़ी थी वह घोड़ी बूड़ोजी ने भी माँगी थी परन्तु नहीं मिली और जींदराव खींची भी मुँह माँगी कीमत देकर घोड़ी लेना चाहता था किन्तु देवल चारणी ने घोड़ी किसी भी कीमत पर नहीं दी क्योंकि यही घोड़ी उसकी गायों की रखवाली किया करती थी। पाबूजी ने गायों की रक्षार्थ प्राण देने का वचन देकर घोड़ी प्राप्त कर ली जिसके कारण पाबूजी को अपने बड़े भाई बूड़ोजी के वैमनस्य का पात्र होना पड़ा। उधर जींदराव खींची भी देवल चारणी से नाराज हो गया।[17]

लोक मान्यता है कि मरुप्रदेश में ऊँट को लाने वाले वीर पुरुष पाबू ही थे। उनसे पूर्व हमारे यहाँ ऊँट नहीं थे।[18] बूड़ोजी की पुत्री केलमदे का विवाह गोगाजी चौहान के साथ हुआ था, इस अवसर पर बूड़ोजी ने तो यथा सामर्थ्य दहेज दिया किन्तु पाबूजी के पास उस समय बूढ़ी ऊँटनी के अतिरिक्त कुछ नहीं था, अतः उन्होंने सिंध में लंकेऊ गाँव के शक्तिशाली जागीरदार दोदे सूमरे की सांढियों (ऊँट–ऊँटनियों) का टोला लूट कर दहेज के रूप में देने का संकल्प लिया। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए पाबूजी केसर कालमी पर सवार होकर अपने सेवक हरिया (हरमल) राइका और सातों थोरियों को लेकर सिंध की ओर प्रस्थान कर गए। मार्ग में सात समुद्र पड़ते थे पाबूजी ने उन्हें भी अपनी अलौकिक शक्ति से पार कर लिया और टोले से सांढियाँ लाकर अपना संकल्प पूरा किया।[19]

सिंध से दोदे सूमरे का टोला लूटकर आते समय पाबूजी की सगाई अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री सुपियारदे के साथ तय हुई। माता कमलादे इससे बड़ी प्रसन्न हुई। परन्तु बूड़ोजी व उनकी पत्नी डोड गेहलोताणी बड़ी अप्रसन्न हुई उसने कहा, ''राठौड़ों और सोढ़ों के बीच परम्परागत वैर रहा है। आप सोढ़ी से विवाह करके भी सुख से जीवन व्यतीत नहीं कर सकोगे।''

पाबूजी ने सभी देवी–देवताओं और अपने सगे सम्बन्धियों को विवाह में आमंत्रित करने हेतु पीले चावल भेजे। बहिन पेमल को भी बुलावा भेजा परन्तु बहनोई जींदराव खींची को नहीं बुलाया। इससे वह बड़ा अप्रसन्न हुआ। पाबूजी सज–धज कर केसर कालमी पर सवार हुए। बूड़ोजी दर्द का बहाना बनाकर बारात में नहीं गए। अमरकोट पहुँचने पर पाबूजी को गढ़ में ले जाया गया।

मंत्रोच्चार होने लगे। पाणिग्रहण करवाया गया। तभी पास में बैठी सुपियारदे की दाहिनी आँख फरकने लगी। मन में आशंका उत्पन्न हुई। 'फेरे' होने लगे। सुपियारदे आगे चल रही थी और पाबूजी पीछे। इस बार पाबूजी के आगे चलने की बारी थी। तभी बाहर खड़ी कालवी घोड़ी हिनहिनाहट करने लगी। बँधे हुए बंधन को वह तोड़ने लगी। ढेमा ने कालवी से कहा, 'तुम विवाह में विघ्न मत डालो'। तो केसर ने कहा–

जिण गायां को चांदा पीयो मीठो दूध
कोई उण तो गायां ने जायल खींची ले गयो रे

(जिन गायों का मीठा दूध पीकर में बड़ी हुई हूँ। आज मेरी अनुपस्थिति में उन गायों को जींदराव घेर कर ले जा रहा है) पाबूजी चवरीं में बैठे यह बात सुन लेते हैं। उधर जींदराव खींची देवल देवी की गायों को घेर कर मँगवा लेता है।[20] देवल देवी विलाप करती हुई बूड़ोजी के पास जाती है परन्तु बूड़ोजी पेट दर्द का बहाना बनाकर उसे पाबूजी के पास जाने को कहते हैं।

घोड़ी की हिनहिनाहट सुनकर पाबूजी चवंरी में से उठ खड़े हुए सुपियारदे सोढ़ी से हथलेवा छुड़ाकर गठजोड़ की गाँठ तलवार से काट दी और बाहर बँधी घोड़ी की तरफ जाने लगे। तभी सोढ़ी सुपियारदे जाते हुए पाबूजी से कहती है–

तीजोड़ा फेरा में जी पाबू किस विध चाल्या छोड़।
आधी तो कुँवारी जी म्हाने आधी ब्यायोडी छोड।।[21]

हे स्वामी! आप मुझे किस त्रुटि वश यूँ छोड़ कर जा रहे हैं? पाबूजी कहते है, कि हे सोढ़ी रानी! वीरों के वचन और पिता एक ही होते हैं। मैं अपना मस्तक बेच चुका हूँ। मुझे अब गायों की रक्षा के लिए जाना है। अगर मैं इस समय गायों की रक्षा के लिए नहीं जाऊँगा तो मेरा स्थान न यहाँ न, परलोक में। तब सोढ़ी अपने वीर पति का उत्साह बढ़ाते हुए कहती है –

'सैनाणी तो दे जाओजी म्हानै थारा हाथ री'

अपने हाथ का कोई प्रतीक चिह्न तो देते जाइए। जिससे मैं आपकी अनुपस्थिति में देखकर अपना मन बहला सकूँ। पाबूजी उत्तर देते हैं, 'कि अगर रण क्षेत्र में से जीवित लौट आया तो तुम से आकर अवश्य मिलूँगा। यदि रण क्षेत्र में काम आया तो ऊँट सवार मेरा साफा लाकर आपको दे देगा।

केसर कालमी पर सवार पाबूजी कोलू आते ही देवल देवी से मिले और चांदा व ढेमा को साथ लेकर जींदराव का पीछा किया। पाबूजी को वहाँ उपस्थित देखकर जींदराव भयभीत हो उठा। दोनों पक्षों में भयंकर रक्तपात हुआ। कई सैनिक काम आ गए। ढेमा ने युद्ध में 'तीरों का सावण भादवा' लगा दिया तो 'भालाला' राठौड़ ने अपने भाले से कईयों को मार गिराया। परन्तु मर्यादावश अपनी बहिन के सुहाग का ध्यान रखते हुए पाबूजी ने जींदराव को प्राणदान दिया। गायों को पाकर विलाप करती हुई देवल देवी व चारणियाँ खुशी से झूम उठी।

उधर माता कमलादे ने समाचार सुना कि पाबूजी गायों को छुड़ाने के लिए गए हैं तो उन्होंने बूड़ा को फटकार लगाई। माँ की फटकार सुनकर बूड़ा अपने पुत्रों को लेकर घोड़ी पर सवार हो जींदराव का पीछा करने गया। परन्तु वहाँ रक्तपात को देखकर बूड़ा ने सोचा कि पाबूजी काम आ गए। उन्होंने जींदराव को युद्ध के लिए ललकारा। वहाँ बूड़ोजी व उनके पुत्र युद्ध में काम आ गए। इस घटना से जींदराव भयभीत हो गया कि पाबू अब भाई का वैर लेगा। ऐसा विचार कर जींदराव अपने मामा भाटी की फौज लेकर पाबूजी पर हमला करने के लिए निकला। पाबूजी व उनके साथी तीन दिन से प्यासी गायों को कुएँ पर पानी पिला रहे थे। तभी जींदराव आ धमका वहाँ दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। पाबूजी के आजीवन साथी चांदा व ढेमा भी लड़ते–लड़ते वीरगति को प्राप्त हुए। पाबूजी गायों की रक्षा करते हुए चौबीस वर्ष की युवावस्था में ही वीरगति को प्राप्त हुए। पाबूजी द्वारा युद्ध में वीरगति प्राप्त हो जाने पर उनका 'मोलिया' अमरकोट भेज दिया गया। सोढ़ी रानी उनके साथ सती हुई। बूड़ोजी की गर्भवती रानी भी तैयार हो गई परन्तु गर्भ होने पर सती होना वर्जित था। अतः उसने कटार से उदर को (झरड़कर) चीर कर पुत्र को निकाला व उसे ननिहाल भिजवा दिया। जिसका नाम झरड़ा रखा गया।[22] झरड़ेजी ने अपनी अल्पआयु में ही अपने फूफा जींदराव खींची को मारकर पिता व काका का वैर लिया। चिता पर बैठकर दोनों रानियों ने सूर्य देव से तेज देने की प्रार्थना की। थोड़ी ही देर में चिताएँ जलने लगी।

पाबूजी अपने नवयौवन में ही 24 वर्ष की अवस्था में विक्रम संवत् 1323 की श्रावण शुक्ला दशमी के दिन वीरगति को प्राप्त हुए। इस विषय में मोडजी आशिया का यह दोहा प्रसिद्ध है कि –

तेरह रौ तेवीसियौ, सांवणा दसमी स्वेत।
पाल समर पड़ियौ प्रसिद्ध हठी वरन रै हेथ।।[23]

वीरवर पाबूजी की कर्मस्थली ग्राम कोलू (फलौदी) में पाबूजी का देवल (मन्दिर) है। देवल परिसर में दो मन्दिर है प्रथम का निज भाग जोधपुर के संस्थापक राव जोधाजी के पाटवी पुत्र राव सातल ने बनवाया अर्थात् निज मन्दिर की स्थापना 16वीं शती में राव सातल ने की, जिसका शेष भाग बीकानेर के महाराजा रायसिंह जी ने बनवाया। दूसरा मन्दिर जोधपुर के महाराजा अभयसिंह जी ने विक्रम संवत् 1768 में बनवाया। जहाँ प्रतिवर्ष इनकी स्मृति में मेला लगता है।[24]

पाबूजी को नायक, थोरी, बावरी, भील, रेबारी, देवासी तथा राठौड़ राजपूत अपना इष्टदेव मानते हैं। राजस्थान का लोक हृदय उनकी ऊँटों के देवता के रूप में पूजा करता है।[25] विश्वास किया जाता है कि इनकी मनौती करने पर ऊँटों की रुग्णता दूर हो जाती है। (ऊँट के गले में पाबूजी के नाम की तांती बाँध दी जाती है)[26] और उनके स्वस्थ होने पर भोपे–भोपी द्वारा 'पाबूजी की पड़' बँचवाई जाती है तथा सवामणी भी की जाती है। इष्टदेव की कृपा से किसी कार्य के निर्विघ्न सम्पन्न होने पर भी पड़ बँचवाई जाती है।[27]

पाबूजी की पड़ राजस्थान में सबसे अधिक बाँची जाती है। इसे नायक या भील जाति के भोपा–भोपी बाँचते हैं। मूलतः दो व्यक्ति जिसमें एक स्त्री व एक पुरुष भोपा होता है। भोपे के पास रावण हत्था नामक लोक–वाद्य होता है। भोपी के हाथ में छड़ी के सिरे से लटकता हुआ दीपक होता है, गाते समय भोपी पड़ के चित्रों व भावों को छड़ी के सहायता से इंगित करती रहती है। इसमें चित्रित

चित्र एक विशेष क्रम में होते हैं। यह कथा रात्रि में गाई जाती है। पाबूजी की पड़ की प्रमुख विशेषता यह है कि उसमें पाबूजी केसर कालमी घोड़ी पर सवार, हाथ में भाला लिए हुए अंकित किए जाते हैं एवं लाल–भूरी सांढियों के चित्र बने होते हैं जो अन्य पड़ों में देखने को नहीं मिलते हैं। यह पड़ पन्द्रह फीट लम्बी तथा चार से साढ़े चार फीट चौड़ी, कपड़े पर बनी होती है।[28] (चित्र–1)

पाबूजी की वीरता और वचन–निर्वाह राजस्थान लोकमानस के चरित्र सम्बन्धी कल्पना की कसौटी पर खरे उतरते है। राजस्थानी लोकमानस में वीरोचित चरित्र का जो आदर्श रूप सदियों से माना जाता रहा है, पाबूजी का चरित्र उस आदर्श की रूप–रेखा में पूर्णतया समाविष्ट हो जाता है। शरणागत–रक्षा, वचन–निर्वाह, त्याग और वीरता के तो ये वस्तुतः एक ज्वलन्त उदाहरण ही बन गए हैं। वीरों की भूमि राजस्थान ने ऐसे वीर को देवताओं की श्रेणी में रख दिया, तो इसमें आश्चर्य नहीं। जब तक मानव में आस्था और श्रद्धा की भावना बनी रहेगी तब तक पाबूजी का चरित्र राजस्थान के लोकमानस को उद्वेलित कर प्रेरणा देता रहेगा। वीरवर पाबूजी राजस्थानी पवाड़ों और कथाओं में अमर रहेंगे।

वचन–निर्वाह के कारण ही राठौड़ वंश के वीर पाबू के लिए यह दोहा प्रचलित है –

घोड़ो जोड़ो पागड़ी, मूंछा तणीं मरोड़।
ये पांचू ही राखली, रजपूती राठौड़।।

लक्ष्मण अवतार पाबूजी और कोलूमण्ढ तभी तो आज प्रसिद्ध है।

कोलूमण्ढ ग्राम और पाबूजी नाम है।
तो लक्ष्मणकंवार विश्व भर में विख्यात है।।

धांधल के घर जन्मा हुआ वीर पाबू केवल मरुस्थली की ही धरोहर नहीं उस पर सम्पूर्ण हिन्दुस्तान को गौरव है –

तूं वीरा भोपाल पाल थलवट धरती रौ।
है सूरज हिन्दवांण पाल जीवो धांधल रौ।

राजस्थान की सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने में लोक देवी–देवताओं का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा है। आस्था और विश्वास के केन्द्र लोक देवी–देवता विपत्ति और निराशा की घड़ियों में सम्बल बन जीवन के व्यतिक्रम को बिखरने एवं टूटने से बचाकर आशा का सचार करते हैं। ये लोक देवता विशिष्ट और पारलौकिक अवतार नहीं थे अपितु आमजन में जन्म लेने वाले साधारण बालक रहे। जो अपने लोक–कल्याणकारी कार्यों से विशिष्ट बन गए। इन्होंने लोक हित में अपनी शूरवीरता, त्याग, बलिदान व कर्तव्यपरायणता का परिचय देकर निम्न वर्ग की जातियों के जनमानस में अपने प्रति आस्था, विश्वास उत्पन्न कर लोक देवता का स्थान प्राप्त किया। राजस्थान में लोक–देवताओं के पग–पग पर बने थान, देवरे और चबूतरे उनकी इसी वीरता की कहानी कहते नज़र आते हैं ऐसी वीरता का उदाहरण विश्व के इतिहास में दुर्लभ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पेमाराम : राजस्थान में धर्म, सम्प्रदाय और आस्थाएँ, निवाई, 2004, पृष्ठ सं. 111*
2. *दिनेश चन्द शुक्ल एवं ओकार नारायण सिंह : राजस्थान की भक्ति परम्परा तथा संस्कृति, जोधपुर, 1992, पृष्ठ सं. 117*
3. *दिनेश चन्द शुक्ल एवं ओकार नारायण सिंह : राजस्थान की भक्ति परम्परा तथा संस्कृति, जोधपुर, 1992, पृष्ठ सं. 42*
4. *सुमन ढाका : राजस्थान के लोक देवी–देवता एक चेतना, जयपुर, 2016, पृष्ठ सं. 88*
5. *सुरेश सालवी : राजस्थानी लोक संस्कृति एवं लोक देवी–देवता, उदयपुर, 2009, पृष्ठ सं.67*
6. *गौरीशंकर हीराचन्द ओझा : जोधपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ सं. 25 व 163*
7. *विश्वेश्वर नाथ रेउ : मारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ सं. 45*
8. *महीपाल सिंह राठौड़ : लोक देवता पाबूजी, जोधपुर, 2012, पृष्ठ सं. 44*
9. *नारायण सिंह भाटी (सम्पा.) : मोडजी आशिया–पाबू प्रकास, पृष्ठ सं. 10*
10. *नारायण सिंह भाटी (सम्पा.) : मोडजी आशिया–पाबू प्रकास, पृष्ठ सं. 10*
11. *नारायण सिंह भाटी (सम्पा.) : मोडजी आशिया–पाबू प्रकास, पृष्ठ सं. 11*
12. *पुष्पा भाटी : राजस्थान के लोक देवता एवं लोक साहित्य, पृष्ठ सं. 119*
13. *राठौड़ां में खांप धांधलां री ख्यात, 15649 (1), जोधपुर, 1950, पृष्ठ सं. 8*
14. *नारायण सिंह भाटी (सम्पा.) : मोडजी आशिया–पाबू प्रकास, पृष्ठ सं. 13*
15. *नारायण सिंह भाटी (सम्पा.) : मोडजी आशिया–पाबू प्रकास, पृष्ठ सं. 13*
16. *बद्रीप्रसाद साकरिया (सम्पा.) : मुहणोत नैणसी री ख्यात, भाग–द्वितीय, जोधपुर, पृष्ठ सं. 168*
17. *सोनाराम बिश्नोई : बाबा रामदेव इतिहास एवं साहित्य, जोधपुर, 1989, पृष्ठ सं. 41*
18. *नरपत बारहट : राजस्थान का सांस्कृतिक गौरव, जोधपुर, 2008, पृष्ठ सं. 34*
19. *महीपाल सिंह राठौड़ : लोक देवता पाबूजी, जोधपुर, 2012, पृष्ठ सं. 50*
20. *बद्रीप्रसाद साकरिया (सम्पा.) : मुहणोत नैणसी री ख्यात, भाग–द्वितीय, जोधपुर, पृष्ठ सं. 167–181*
21. *लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत : मांझल रात, पृष्ठ सं. 8*
22. *जींदराव खींची को मारकर जब झरड़ा फलौदी तहसील के जालोड़ा गाँव के पास एक छोटी सी पहाड़ी (भाखरी) तक पहुँचा तो पीछा करके खींचियों ने उसे इसी स्थान पर मार डाला। यह स्थान अब भी 'झरड़े जी री भाखरी' के नाम से पुकारा जाता है, यहाँ पर झरड़ेजी का 'थान' है और झरड़ाजी भी लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं।*
23. *नारायण सिंह भाटी (सम्पा.) : मोडजी आशिया–पाबू प्रकास, पृष्ठ सं. 181*
24. *सोनाराम बिश्नोई : बाबा रामदेव इतिहास एवं साहित्य, जोधपुर, 1989, पृष्ठ सं. 43*
25. *शिवनाथ सिंहःकूंपावत राठौड़ों का इतिहास,पृष्ठ सं. 9*

26. *तांती : रोगग्रस्त पशु या व्यक्ति के कच्चे सूत या मोली का धागा लोक–देवता की जोत के ऊपर से घुमाकर गले में बाँध दी जाती है। इससे रोगग्रस्त व्यक्ति या पशु शीघ्र स्वस्थ हो जाता है। ठीक होने पर तांती खोल दी जाती है और लोक–देवता के थान पर उसको फेरी दिखाने के लिए ले जाया जाता है।*
27. *श्रीलाल मिश्र : पाबूजी के पवाड़ों में राजस्थानी जीवन, मरु भारती, वर्ष 6, अंक–1, पृष्ठ सं. 53*
28. *वन्दना जोशी : मेवाड़ की लोक कला :फड़, उदयपुर, 2012, पृष्ठ सं. 2*

चित्र–1 : पाबूजी की पड

+